بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-20.05.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के दौर में इस्लाम से विमुख होने वालों के उपद्रव तथा विद्रोह के समय भिजवाए जाने वाले युद्ध अभियानों का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 20 मई 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने तश्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद यमामा की लड़ाई के विवरण में इरशाद फ़रमाया- यमामा में अत्यधिक युद्ध करने वाली लड़ाकू क़ौम बनू हनीफ़ः आबाद थी, उनके बारे में तफ़सीरे क़र्तबी में आयत سَتُدْعَوْنَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ (सूरः अलफ़त्ह-17) तुम निकट भविष्य में एक ऐसी क़ौम की ओर बुलाए जाओगे जो बड़ी लड़ाकू होगी तुम उनसे युद्ध करोगे या वे मुसलमान हो जाएँगे, की तफ़सीर में लिखा है, राफ़े बिन ख़दीजा कहते हैं कि हम यह आयत पढ़ते किन्तु यह पता नहीं था कि ये लोग कौन हैं, यहाँ तक कि हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हमें बनू हनीफ़ः से युद्ध के लिए बुलाया तो हमें पता चला कि इनसे अभिप्रायः यह क़ौम है।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सात हिजरी के आरम्भ में अथवा कुछ कथनों के अनुसार छः हिजरी में विभिन्न देशों के राजाओं को तबलीग़ी पत्र लिखे तो एक पत्र यमामा के राजा हवज़ा बिन अली तथा यमामा वालों के नाम भी लिखा।

9 हिजरी में विभिन्न मंडलों की भांति बनू हनीफ़ः का भी एक प्रतिनिधि मंडल मदीना आया। उस मंडल में मुजाअः बिन मुरारा के अतिरिक्त रज्जाल बिन उनफ़ुवा तथा मुसैलमा कज़्ज़ाब भी शामिल थे। यह

मंडल बनू नज्जार को एक अंसारी महिला रमला रज़ी. सुपुत्री हारिस के विशाल घर में ठहरा। जब प्रतिनिधि मंडल निरन्तर रसूले करीम स. की बैअत के उद्देश्य से मदीना आने लगे तो आप स. ने मदीना में ही इसी घर को प्रतिनिधि मंडलों के ठहरने के लिए निश्चित फ़रमाया था। मुसैलमा इस मंडल के साथ रसूलुल्लाह स. से भेंट करने के लिए उपस्थित न हो सका, अथवा कुछ कथन ऐसे भी मिलते हैं जो इसके विरुद्ध हैं। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने इसका वर्णन करते हुए फ़रमाया कि साधारणतः इसके बारे में रिवायतें हैं कि मुसैलमा आप स. से मिला। इस बारे में यह भी कहा जाता है कि हो सकता है कि दूसरी बार जब आया हो तो मिला हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स. के ज़माने में मुसैलमा कज़्ज़ाब मदीना आया और कहने लगा कि यदि मुहम्मद स. अपने बाद मुझे उत्तराधिकारी बनाएँ तो मैं इनका अनुसरण करूँगा। आप स. स्वयं उसके पास तशरीफ़ ले गए और आप स. के हाथ में खजूर की एक छड़ी थी, आप स. ने फ़रमाया कि यदि तू मुझसे यह छड़ी भी मांगे तो मैं तुझे यह भी नहीं दूँगा तथा तू अपने विषय में कदाचित अल्लाह के निर्णय से आगे नहीं बढ़ सकता और यदि तू ने पोठ फेरी तो अल्लाह तेरी जड़ काट देगा और मैं देखता हूँ कि तू ही वह आदमी है जिसके विषय में मुझे सपने में बहुत कुछ दिखाया गया है।

आँहुज़ूर स. ने इस कथन के विषय मं हज़रत अब्बास रज़ी. के सवाल पर हज़रत अबू हुरैरा रज़ी. ने बयान किया कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि एक बार मैं सोया हुआ था, इसी बीच मैंने देखा कि मेरे अपने हाथों में सोने के दो कंगन हैं, उनकी स्थिति ने मुझे चिंता में डाल दिया, फिर मुझे सपने में वह्यी की गई कि मैं इन पर फूंकूं, अतः मैंने उन पर फूंका और वे उड़ गए, मैंने इनका स्वप्न-फल दो झूठे व्यक्ति समझा जो मेरे बाद प्रकट होंगे। रावी अब्दुल्लाह रह. ने कहा कि इनमें से एक वह अंसी है जिसको फ़िरोज़ ने यमन में मार डाला तथा दूसरा मुसैलमा।

प्रतिनिधि मंडल की यमामा वापसी पर अल्लाह का दुश्मन मुसैलमा इस्लाम से फिर गया तथा नबी होने का दावा कर दिया और कहा कि मुझे भी आप स. के साथ नबुव्वत में साझी कर लिया गया है। उसने अपने मानने वालों से पूछा- क्या जब तुमने आप स. के पास मेरे विषय में बात की तो उन्होंने यह नहीं कहा था कि वह अपने सम्मान तथा स्तर की दृष्टि से तुमसे बुरा आदमी नहीं है? यह केवल इस कारण से कहा था कि आप स. जानते थे कि आप स. नबी हैं और मुझे भी आप स. के मामले में साझी कर लिया गया है।

फिर मुसैलमा ने अपनी ही शरीअत शुरु कर दी तथा बनावट करके लोगों के लिए क़ुर्आन करीम की नक़ल करते हुए कलाम बनाने लगा और उनसे नमाज़ माफ़ कर दी, एक रिवायत के अनुसार उसने दो नमाज़ें इशा तथा फ़जर माफ़ की थी, और लोगों के लिए शराब तथा व्यभिचार को वैध घोषित कर दिया, इसके साथ ही वह यह भी गवाही देता कि आँहुज़ूर नबी हैं। बनू हनीफ़ः ने इन बातों पर उसके साथ सहमति कर ली।

एक अन्य कारण जिसने मुसैलमा की शक्ति को बढ़ाया वह यमामा के निवासी रज्जाल बिन उनफ़वा का उससे मिल जाना था जो हिजरत के बाद नबी करीम स. के पास मदीना आ गया था, जहाँ उसने क़ुर्आन करीम पढ़ा तथा दीन की शिक्षा प्राप्त की। जब मुसैलमा ने इस्लाम से विमुखता धारण की तो आप स. ने उसे यमामा के निवासियों की ओर मुअल्लिम बना कर तथा मुसैलमा के आज्ञा पालन से रोकने के लिए भेजा, परन्तु यह उससे बढ़ कर हानि का कारण बना, इसी प्रकार मुसैलमा की नबुव्वत का झूठा इक़रार करने के साथ साथ रसूलुल्लाह स. से एक झूठा कथन भी जोड़ दिया कि मुसैलमा नबुव्वत में आप स. के साथ साझी

किया गया है। जब यमामा के लोगों ने देखा कि एक ऐसा व्यक्ति मुसैलमा की नबुव्वत की गवाही दे रहा है जो कि रसूलुल्लाह स. के साथियों में से है और वह लोगों को क़ुर्आन करीम की शिक्षा देने वाला है तो उन लोगों के लिए मुसैलमा की नबुव्वत से इंकार करने का कोई कारण नहीं रहा और लोगां के समूह मुसैलमा के पास आकर बड़ी संख्या में बैअत करने लगे।

मुसैलमा न रसूलुल्लाह स. की ओर एक पत्र भी लिखा जिसका विषय इस प्रकार है कि अल्लाह के रसूल मुसैलमा की ओर से रसूलुल्लाह की ओर- तत्पश्चात, आधी धरती हमारी है तथा आधी क़ुरैश की, किन्तु क़ुरैश न्याय नहीं करते। इसके जवाब में आप स. ने उसे पत्र लिखा- बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, मुहम्मद नबी स. की ओर से मुसैलमा कज़्ज़ाब को- तत्पश्चात, निश्चित ही धरती अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिसको चाहेगा देगा, उसका उत्तराधिकारी बना देगा, तथा आख़िरत अल्लाह से प्रेम करने वालों की ही हुआ करती है तथा उस पर सलामती हो जो हिदायत का अनुसरण करे।

आँहज़रत स. का यह पत्र हबीब रज़ी. बिन ज़ैद अंसारी लेकर गए। उन्होंने जब यह पत्र मुसैलमा को दिया तो उसने कहा कि क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि मुहम्मद स. अल्लाह के रसूल हैं? जवाब मिला, हाँ। फिर उसने कहा- क्या तुम इस बात की गवाही देत हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? उन्होंने फ़रमाया कि मैं बहरा हूँ, मैं सुनता नहीं। बात टाल दी। मुसैलमा बार बार यही सवाल दोहराता रहा, यह चाहता था कि वे स्वीकार करें कि वह भी नबी है। जब उसकी इच्छानुसार जवाब न मिलता तो वह उनके शरीर का एक अंग काट देता। हज़रत हबीब रज़ी. धैर्य तथा दृढ़ता का पहाड़ बने रहे, यहाँ तक कि उसने आपके टुकड़े टुकड़े कर डाले। उसके सामने हज़रत हबीब रज़ी. ने जामे शहादत नोश कर लिया (शहादत का सौभाग्य प्राप्त किया) अब यह केवल नबुव्वत का दावा नहीं है अपितु अत्याचार भी है, किस तरह उसने अपने आपको नबी न मानने वालों से व्यवहार किया। मुसैलमा ने यमामा में विद्रोह का झंडा उठा लिया और यमामा में रसूलुल्लाह स. के सेवक हज़रत समामा रज़ी. बिन असाल को निकाल दिया। जब नबी करीम स. का देहान्त हो गया तथा हज़रत अबू बकर रज़ी. ने इस्लाम से विमुख लोगों की ओर विभिन्न सेनाओं को भेजा तो हज़रत इकरिमा रज़ी. के नेतृत्व में एक सेना मुसैलमा कज़्जाब की ओर भी भेजी तथा उनकी सहायता के लिए उनके पीछे हज़रत शुरहबील रज़ी. बिन हस्ना को रवाना फ़रमाया। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत इकरिमा रज़ी. को यह निर्देश दिया कि शुरहबील रज़ी. के पहुंचने से पहले मुसैलमा से लड़ाई मत छेड़ना, किन्तु हज़रत इकरिमा रज़ी. ने तेज़ी दिखाई तथा शुरहबील रज़ी. के पहुंचने से पहले ही यमामा के लोगों पर हमला कर दिया ताकि सफलता का ताज उनके सिर पर आए, परन्तु वे कठिनाई में फंस गए तथा उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत शुरहबील रज़ी. को किसी दूसरे आदेश के आने तक वहीं ठहरने का निर्देश दिया।

तत्पश्चात हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को मुसैलाम की ओर भेजा तथा आप रज़ी. की सहायता के लिए हज़रत सलीद रज़ी. के नेतृत्व में और अधिक सहायक दल भी भेजा ताकि वह उनकी पीछे से सुरक्षा करे। उनके साथ मिलकर युद्ध करने के लिए एक दल मुहाजिरों तथा अंसार का भी रवाना फ़रमाया। हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद बुताह नामक स्थान पर इस सेना की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब ये सब आप रज़ी. के पास पहुंच गए तो यमामा की ओर रवाना हुए।

युद्ध आरम्भ होने से पहले ही मुसलमानों ने बनू हनीफ़ः के एक सरदार को पकड़ लिया। अतः एक रिवायत में वर्णन है कि मजाअः बिन मरारा जो कि बनू हनीफ़ः का सरदार था, एक गिरोह के साथ बाहर निकला तो मुसलमानों ने उसे तथा उसके साथियों को पकड़ लिया। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने उसके साथियों की हत्या कर दी तथा उन्हीं में से एक सारियः बिन मुसैलमा बिन आमिर ने सुझाव दिया कि ऐ ख़ालिद! यदि तुम यमामा वालों के बारे में कोई भलाई अथवा बुराई चाहते हो तो मजाअः को जीवित रखो, क्यूँकि यह युद्ध तथा शांति के समय पर तुम्हारा सहायक सिद्ध होगा। आप रज़ी. को उसकी यह बात पसन्द आई तथा मुजाअः को नहीं मारा और सारियः को भी जीवित रखा।

हज़रत ख़ालिद रज़ी. यमामा की ओर चले तथा सुदृढ़ योजना बनाने की व्यवस्था की। आप रज़ी. ने हज़रत शुरहबील बिन हस्ना को आगे बढ़ाया तथा इस्लामी सेनाओं को पाँच भागों में विभाजित किया जो कि इस अभियान से पहले का अन्तिम संयोजन था। मुसैलमा के सहयोगी लड़ाकुओं की संख्या चालीस हज़ार अथवा एक रिवायत के अनुसार एक लाख या उससे भी अधिक थी, जबकि मुसलमान दस हज़ार से अधिक थे। बनू हनीफ़ः तथा मुसलमानों के बीच उक़रबा नामक स्थान पर घमसान युद्ध हुआ। मुसलमानों को इससे पहले ऐसी लड़ाई का सामना नहीं करना पड़ा था, मुसलमान हारने लगे। इस्लाम की सेना के पीछे हटने के बावजूद हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद के साहस एवं दृढ़ संकल्प तथा जोश में तनिक सी भी कमी नहीं आई। आप रज़ी. ने पुकार कर अपनी सेना से कहा कि ऐ मुसलमानो! अलग अलग हो जाओ ताकि हम देख सकें कि किस क़बीले ने लड़ाई में सबसे बढ़ कर दलेरी का सबूत दिया है। इस घोषणा से मानो आप रज़ी. ने समस्त क़बीलों में एक नई आत्मा तथा जोश की प्रतिस्पर्धा पैदा कर दी।

सहाबा किराम एक दूसरे को युद्ध के लिए प्रेरित करने लगे तथा कहने लगे कि ऐ सूरः बक़रा वालो, आज जादू टूट गया। हज़रत साबित रज़ी. बिन क़ैस ने आधी पिंडलियों तक ज़मीन खोद ली तथा अपने आपको उसमें गाड़ लिया। आप रज़ी. अंसार का झंडा उठाए हुए थे और आप रज़ी. ने शरीर पर धूल लपेट ली थी, मानो ऐसा अभिव्यक्त कर रहे थे कि जो काम मरने के बाद लोगों ने मेरे साथ करना था, वह मैंने स्वयं अपने साथ कर लिया है और मैं मरने के लिए तय्यार हूँ। रिवायत है कि उन्होंने कफ़न बाँध लिया तथा दुश्मन के मुक़ाबले पर जमे रहे यहाँ तक कि जामे शहादत नोश किया। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इसका वर्णन अभी और है इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

ख़ुत्बः के अंत में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम अब्दुस्सलाम साहब शहीद इब्ने मास्टर मुनव्वर अहमद साहब ऑफ़ ओकाड़ा, पाकिस्तान की शहादत की घटना तथा उनके सद्गुणों का विस्तार पूर्वक वर्णन फ़रमाया तथा अन्य दो मरहूमीन मुकर्रम जुलफ़क़्क़ार अहमद इब्ने मुकर्रम शेख़ सईदुल्लाह साहब फ़ैसलाबाद, पाकिस्तान और मुकर्रम मलक तबस्सुम मक़सूद साहब ऑफ़ कैनेडा का भी सद्वर्णन फ़रमाने के बाद उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔